International Journal of Applied Research 2021; 7(9): 252-255

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 252-255
www.allresearchjournal.com
Received: 13-07-2021
Accepted: 21-08-2021

Swab Mohad
Research Scholar, Motherhood University Roorkee, Bhuna, Uttarakhand, India

Dr. Anup Baluni
Associate Professor, Motherhood University Roorkee, Bhuna, Uttarakhand, India

Corresponding Author:
Swab Mohad
Research Scholar, Motherhood University Roorkee, Bhuna, Uttarakhand, India

उच्चमाध्यमिक स्तर के छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन

Swab Mohad and Dr. Anup Baluni

सारांश
प्रस्तुत शोध का उद्देश्यसरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन रहा । इसके लिए दो परिकल्पनाएं सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोई सम्बन्ध नही है तथा सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोई सम्बन्ध नही है निर्मित की गई है । अध्ययन पूर्ण करने हेतु शोध की वर्णनात्मकसर्वेक्षणविधि प्रयोग की गईतथा'टी' परीक्षण के द्वारा आंकड़ों को विश्लेषित किया गया।न्यादर्श के रूप में सहारनपुर जिले के छुटमलपुर क्षेत्र के सरकारी एवं निजी उच्चमाध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 एवं 12 के 400 छात्रों का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि के द्वारा चयन किया गया।सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालकों का निम्न सामाजिक–आर्थिक पर मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया एवं मध्यम व उच्च सामाजिक–आर्थिकपरमानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तरपाया गया। सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिकाओं का निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर परमानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया एवंमध्यम व उच्च सामाजिक–आर्थिक परमानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तरपाया गया।

प्रस्तावना:
शिक्षा समाज की एक प्रक्रिया है। शिक्षाशास्त्रियों एवं सामाशास्त्रियों का विचार है कि शिक्षा मानव सामाजिक संरचना के रूप में होती है। वस्तुतः समाज में मानवों के द्वारा शिक्षा के द्वारा ही अपना स्थान एवं जीवन का निर्धरण किया जाता है। इस परिवर्तनशील समाज में शिक्षा प्रक्रिया में भी निरन्तर परिवर्तन होता है। जैसा– समाज होता है वैंसी ही शिक्षा व्यवस्था। शिक्षा प्रप्त करना हमारा मौलिक अधिकार है। शिक्षा मानव विकास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती है। शिक्षा मानव के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्य अपने जन्म के बाद ही शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ करता है। शिक्षा आवश्यकता के अनुसार मानव क्षमताओं के विकास का कार्य भी करती हैं शिक्षा मानव को सर्वांगीण विकास का परिवेश देती है। जन्म के समय बालक का मस्तिष्क खाली कागज के समान होता है जिसमें वह अपने अनुभव की लेखनी से लिखता है, इन अनुभवों को वह समाज के सम्पर्क से प्राप्त करता है। जैंसे–जैंसे उसकी अवस्था बढ़ती है वह विभिन्न संवेदनाओं में भेद करना सीख जाता है। शिक्षा एक प्रक्रिया के रूप में मानव, समाज और राष्ट्र को प्रतयक्ष रूप से लाभ प्रदान करती है। इस प्रकिया में परिवार, विद्यालय, समाज और समूह आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मानव की उत्पत्ति का मूल शिक्षा ही है। परन्तु केवल अनुकरण के द्वारा अनुभव भी सम्भव नही है, बुद्धि, चिन्तन इत्यादि पक्ष भी अनुभवनिर्माण में सहायक होतें हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि बुद्धि और चिन्तन के अभाव में कोई भी शिक्षण सम्भव नही है। शिक्षा सदैव सामाजिक आवश्यकता से प्रभावित होती रही है। वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। समाज में प्रतिदिन विभिन्न नवाचार होते हैं इस कारण से हमारे लिए आवश्यक है कि हम अध्ययन–अध्यापन के लिए नवीन विचार, प्रयोग, नवाचार ओर नवीन पद्धतियों का प्रयोग कर विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवस्था करें जिससे उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके ऐसा होने पर समाज प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकेगा और सभी लोग अपनं–अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में समर्थ एवं सक्षम हो सकेगें। प्रत्येक बालक अलग–अलग प्रतिभाओं से सम्पन्न है किशोरावस्था में बालक की आयु चरम सीमा पर होती है। किशोरावस्थाएक महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील अवस्था है इसलिए इनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है क्योकि युवा राष्ट्र के धरोहर है।

अतः वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बालकों के विश्वास गुणवत्ता, सेवाभावना, मानवीय सम्बन्ध ज्ञान, कर्तव्य निष्पादन, सर्जनात्मकता,शैक्षिक रूचियों पर अत्यधिक बल दिया जाना चाहिए। रुचियां आयु के साथ–2 बदलती रहती हैं छोटे बच्चों में ये रुचियां बड़ी तीव्रता से बदलती रहती हैं। किशोरावस्था जीवन का वह समय है जब व्यक्ति के आत्मनिर्भर बनने की नींव पड़ती है। इस आयु में किशोर–किशोरियाँ अपने भविष्य की चिंता करने लगते हैं। यदि यहीं से वे मंजिल का सही रास्ता खोज लें तो भविष्य के अच्छे आत्मनिर्भर नागरिक बन सकते हैं। सही निर्णय ही आपके सपने पूरे कर सकते हैं। आत्मनिर्भर होना अतिआवश्यक है। आत्मानुशासन के द्वारा अपने जीवन के लिए बनाई गई योजनाओं व लक्ष्यों को आगे विकसित किया जा सकता है। आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने के लिए सबसे पहला चरण है अपनी क्षमताओं और संसाधनों का आकलन कर लक्ष्य की ओर बढ़ना। अपने अनुभव के आधार पर कमियों–कमजोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करने के प्रयास करते हुए हम निरंतर आत्म निर्भरता की ओर बढ़ सकते हैं। जीवन के विभिन्न चरणों में हमें कई निर्णय लेने पड़ते हैं, जिसके लिये हम अपने परिजन अथवा अपने से उम्र में बड़े व्यक्ति के पास जाते हैं जिनके अनुभवों से हम सीख सकते हैं। किसी बिन्दु पर विचार–विमर्श करना निर्भरता नहीं है, परन्तु असफलता के डर से स्वयं निर्णय नहीं लेना मानसिक निर्भरता का छोटा सा उदाहरण है। इसी निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर हमें चलना हैं स्वस्थ मस्तिष्क, जागरूकता एवं सुदृढ़ता आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक बिन्दु हैं।

मानसिक स्वास्थ्य

आप स्वास्थ्य शब्द से तो काफी हद तक परिचित ही होगें। आमतौर पर हम इसे प्रभावशाली शारीरिक स्थिति या शारीरिक क्रियाओं के सबंध में ही समझतें है। जब हम स्वास्थ्य की अवधारणा का मन के सन्दर्भ में उपयोंग करते है तब हम 'मानसिक स्वास्थ्य' शब्द का प्रयोग करते है। वास्तव में , हमें शारीरिक और मानसिक दोंनो तरह कें स्वास्थ्य की आवश्यकता हो ती है। आप को यह ज्ञात होना चाहिए कि हमारा शरीर तभी अपनी सभी क्रियाएं भलीभांति कर पाने में सक्षम हो सकता है जब हमारी मनोदशा सतुलित और स्वस्थ हो ।
बहुधा स्वास्थ्य का प्रयोग व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और अध्यात्मिक कुशलतो के सदर्भ मं किया जाता है। अतः मानसिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य की व्यापक अवधारणाा का ही एक तत्व है। यह व्यक्ति के भावनात्मक व व्यवहारात्मक सामंजस्य के इष्टतम स्तर से संबद्व है। यह बाहरी वातावरण में विद्यामान परिस्थितियों कें सदर्भ में व्यक्ति की आवश्यकताओं , इच्छाओं ,अभिलाषाओं और दृष्टिकोंण में संतुलन बनाए रखने की अवस्था है। मानसिक स्वच्छता की अवधारणा मानसिक स्वास्थ्य से घनिष्ठ रूप से सबंधित है। स्वच्छता की अवधारणा का हम रोगो और बीमारियों सें बचाने के लिए किसी व्यक्ति को स्वय अपने रहन–सहन और कार्य करन के स्थान को साफ सुथरा रखने के सदर्भ में प्रयोंग करते है । जब हम इस अवधारणा का मन के क्षेत्र मे विस्तार सें देखते है तो इसे अच्छे , प्रभावशाली और सक्षम मानसिक स्वास्थ्य का बनाए रखने के लिए आवश्यक व्यवहारवादी, भावनात्मक और सामाजिक कौशल का विकसित करने , कायम रखने और प्रोत्साहन देने की कला के रूप मे पातें हैं। व्यक्ति दैनिक जीवन म मानसिक व व्यवहारत्मक स्तर पर निम्नलिखित कुटनीतियों का पालन कर इन कौशलों कों प्राप्त कर सकता है।

अ.) यथार्थ संपर्कः अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाने के लिए स्वयं की प्रतिक्रियाओं, भावनाओं, और योग्यताओं की यथार्थवादी समीक्षा करनी आवश्यक है। यदि आप यथार्थ में जिएंगे तो दैनिक जीवन में बहुत सी निराशाओं और कुंठाओं से बचे रहेंगे।

ब.) आवेग नियंत्रणः स्वस्थ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम व्यक्ति का उसके व्यवहार और उत्तेजना पर अच्छा नियंत्रण होता है। इसलिए अच्छा मानसिक स्वास्थ्य स्थापित करने हेतु यह आवश्यक है कि आपका अपने उत्तेजनापूर्ण व्यवहार पर पूर्ण नियंत्रण हो।

स.) आत्म–सम्मानः स्वयं के बारे में जागरूक होने को आत्म संप्रत्यय कहते हैं। यह भावनाओं, विश्वासों और मूल्यों को व्यक्त करने के अर्थ में कहे गए 'मैं' या 'मुझसे' सम्बन्धी सभी कथनों को सम्मिलित करता है। अतः आत्म मनोभाव का अर्थ स्वंय के प्रति जागरूकता का कुल योग है। आत्म सम्मान आत्म का मूल्यांकनात्मक तत्व है। आत्म के प्रति किया गया किसी का व्यक्तिगत मूल्यांकन सकरात्मक या नकारात्मक हो सकता है। व्यक्तिगत पूर्णता या सकरात्मक आत्म संप्रत्यय के अर्थ का पता होना मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण होता है।

द.) सकारात्मक विचारः मानसिक स्वास्थ्य की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने विचारों को सकरात्मक दिशा देते हैं या नकारात्मक। नकारात्मक विचार नकारात्मक भाव पैदा करते हैं जैसे क्रोध, नफरत, ईर्ष्या, डर और निराशा। इन नकारात्मक संवेगों का हमारे मन पर अस्वास्थ्यकर प्रभाव पड़ता है। यह हमारी हारमोन प्रणाली पर भी हानिकारक प्रभाव डालता है। इसीलिए अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हमें सकारात्मक विचारधारा की क्षमता को बढाना चाहिए जो कि सकारात्मक संवेग जैसे प्रेम, प्रसन्नता, आशा, करुणा, सहानुभूति और आशावाद को जागृत करती है। ये संवेगजीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करनें हेतु हमारे सामर्थ्य को प्रबल बनाते हैं।
मानसिक स्वास्थ्य की परिभाषा – किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके भावनात्मक व्यवहार के संतुलित विकास का वह स्तर जो उसके अन्य सहजीवी एवं सहकर्मी व्यक्तियों के साथ सहअस्तित्व एवं सौहर्दपूर्ण व्यवहार को दर्शाता है, वह मानसिक स्वास्थ्य कहलाता है।
मानसिक स्वास्थ्य के सहयोगी घटक– मानसिक स्वास्थ्य की नींव तो बचपन में ही पड़ जाती है। लेकिन बुद्धि एवं विकास के काल में अन्य घटक हैं जो इसके स्तर को प्रभावित करते हैं।
अ. शारीरिक स्वास्थ्य–शारीरिक स्वास्थ्य का सीधा असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। कहावत भी है अच्छे व स्वस्थ शरीर में ही अच्छे स्वास्थ्य का निवास होता है। जब मनुष्य शारीरिक रूप से बीमार होता है तो इसका असर मन पर पड़ता है मन दुःखी हो जाता है। इसीलिये माना जाता है कि अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का अति आवश्यक तत्व है।
ब. मूलभूत आवश्यकताएँ –मानसिक स्वास्थ्य के लिए शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकताएँ अति आवष्यक हैं। इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना मानसिक स्वास्थ्य की बात करना निरर्थक है।
स. शारीरिक आवश्यकताएँ –रोटी, कपड़ा, मकान, मनोरंजन, नींद आदि शारीरिक आवश्यकताओं की श्रेणी में आता है।
द. मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ –स्नेह प्यार–दुलार, स्वतंन्त्रता, यष, प्रषंसा, उपलब्धि आदि मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ हैं। इनकी पूर्ति करना भी अति आवश्यक है।
य. आदतें–आदमी कर्मशील प्राणी है। उसे कोई न कोई कार्य करना ही पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ अच्छी व बुरी आदतें होती हैं। जैसे– समय पर खाना, विश्राम करना, नियमित खेलना या योगाभ्यास करना, अध्ययन काम करने की धुन,

सात्विक भोजन ये मनुष्य की अच्छी आदतें है। यह सब मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने में उपयोगी हैं।
मानसिक स्वास्थ्य मन की शक्तियों के उचित विकास तथा मन को शान्त एवं स्वस्थ बनाने के लिए आवश्यक सभी तरह के उपायों का समर्थन करता है। मानसिक स्वास्थ्य को और अच्छी तरह समझने के लिए कुछ परिभाषाओं पर विचार करना उचित रहेगा–
Wallin J.E.W. मानसिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध सभी तरह से पूर्ण एवं सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास से है।

'Wholsome' balanced personality
Who expert Committee (1950) Mental health implies the capacity in an individual to from harmonous relation with others and to participate in or contribute constructively to change in his social and physical environment.
J.A. Hadfield- मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य है व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अपने पूर्ण रूप से अच्छी तरह तालमेल बिठाते हुए कार्य करते रहना।'

'Mental health is the full and harmonious functioning of the whol e personality.'

अतः मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति चिन्ता तथा तनावमुक्त रहता है। मानसिक रूप से व्यक्ति जीवन में आने वाली कठिनाईयों को झेल सकता है, समस्याओं का ठीक तरह से समाधान कर सकता है तथा जीवन की सभी शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा सामाजिक क्रियाओं को धैर्यपूर्वक संचालित करने की क्षमता रखता है विकट से विकट परिस्थितियों में भी अपने आत्मविश्वास को विचलित नहीं होने देता।

सामाजिक–आर्थिक स्तर
सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति दोनों समानार्थी रूप हैं। सामाजिक स्थिति व्यवहारिक रूप में तथा आर्थिक स्थिति व्यवसायिक रूप में व्यक्ति की स्थितियों का निर्धारण करते है। सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सामाजिक स्थिति अच्छी होने से मानसिक अनुकूलता मिलती है, जो व्यवसायिक जीवन में महत्वपूर्ण है तथा व्यवसायिक जीवन ही आर्थिक स्थिति का निर्धारण करती है। व्यवसायिक स्थिति ही समाजिक स्थिति का निर्धारण करते है। समाज में व्यक्ति की यह प्रस्थिति सामाजिक और आर्थिक आधार पर होती है, जो हर समाज में अलग–अलग होती है। व्यक्ति का समाज में कितना योगदान है या उसका क्या मूल्य है। इस आधार पर उसका स्तर निर्धारित होता है। किसी व्यक्ति विशेष की समाज में स्थिति जिसमें वह निवास करता है, उस समाज के लोंगों के बीच में सम्मान और शक्ति बतलाता है। उसकी वह योग्यता जिसके द्वारा नह अपने आस पास रहने वाले व्यक्तियों में सम्मान पाता है। यह व्यक्ति की समाज में इज्जत, सम्मान, प्रभाव और विशिष्ट स्थिति को प्रकट करता है।

According to Kuppu Swami- "Socio-economic status is composed of three variable that is education, occupation and income."

सामाजिक आर्थिक स्तर– छात्रों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से है। प्रत्येक छात्र या छात्रा का समाज में क्या स्तर है तथा आर्थिक रूप से वह कितना सम्पन्न या विपन्न है।
मानसिक स्वास्थ्य–मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य मानव का अपने व्यवहार में सन्तुलन, सांवेगिक एवं सामाजिक क्षेत्रों, आवश्यकताओं शील गुणों एवं इच्छाओं के बीच उचित सामन्जस्य बनाकर चलने से है।

उद्देश्य
सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तरकामानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भमें तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना
पद्धसरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भमें कोई सम्बन्ध नही होता।
पपद्ध सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोइ सम्बन्ध नही होता।

शोध विधि
मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर अन्तर है अथवा नही। अतः अध्ययन पूर्ण करने हेतु शोध की वर्णनात्मकसर्वेक्षण विधि प्रयोग की गई।
जनसंख्या एवं न्यादर्श

जनसंख्या के अर्न्तगत सहारनपुर जिले के छुटमलपुर क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक विद्यालय सम्मिलित हैं। एवं **यादृच्छिक न्यादर्शन** विधि के द्वारा सरकारी एवं निजी उच्चमाध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 एवं 12 के 100 छात्रों का चयन किया गया ।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या
अनुसंधान की समस्या तथा परिकल्पना का निरूपण कर लेने के पश्चात् शोधकर्ता के समक्ष परिकल्पना के सत्यापन की समस्या उत्पन्न होती है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है; जिसके आधार पर आंकड़ों को एकत्रित किया गया तथा 'टी' परीक्षण के द्वारा आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

सारणी संख्या 1: सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालिकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर कामानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भमें कोई सम्बन्ध नही होता।

Sr. No.	Variable	N	Mean	SD	T-score
1	मानसिक स्वास्थ्य	100	95.03	7.22	2.01
2	निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर	39	264.71	24.63	
3	मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर	47	317.62	7.79	2.30
4	उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर	14	351.33	14.18	4.30

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने पर यह तथ्य प्रकट होता है कि. दोनों समूहों सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालकों कानिम्न सामाजिक–आर्थिक में मध्यमान 264.71 मानक विचलन 24.63 एवंमानसिक स्वास्थ्यका मध्यमान 95.03 मानक विचलन 7.22Vh अनुपात 2.01 जो यह प्रकट कर रहा हैकि05 स्तर कोई सार्थक अन्तर नही है। अतःपरिकल्पना स्वीकार की जाती है।
सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालकों कामध्यम सामाजिक–आर्थिक में मध्यमान 317.62 मानक विचलन 7.79 एवंमानसिक स्वास्थ्यका मध्यमान 95.03 मानक विचलन 7.22 टी अनुपात 2.30 जो यह प्रकट कर रहा हैकि .05 विश्वास स्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना निरस्त की जाती है।
सरकारीविद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालकों काउच्च सामाजिक–आर्थिक में मध्यमान 351.33 मानक विचलन 14.18 एवंमानसिक स्वास्थ्यका मध्यमान 95.03 मानक विचलन 7.22 टी अनुपात 4.30 जो यह प्रकट कर रहा हैकि .05 विश्वास स्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना निरस्त की जाती हैं।

सारणी संख्या 2: सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर कामानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भमें कोइ सम्बन्ध नही होता।

Sr. No.	Variable	N	Mean	SD	T Scores
1	मानसिक स्वास्थ्य	100	172.92	19.93	1.97
2	छात्राएं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर	69	270.28	24.60	
3	छात्राएं मध्यम सामाजिक–आर्थिकस्तर	27	313.89	8.57	2.01
4	छात्राएं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर	4	356.75	15.86	3.16

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने पर यह तथ्य प्रकट होता है कि . दोनों समूहों सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालिकाओं कानिम्न सामाजिक–आर्थिक में मध्यमान 270.28 मानक विचलन 24.60 एवंमानसिक स्वास्थ्यका मध्यमान 172.92 मानक विचलन 19.93 टी अनुपात 1.97 जो यह प्रकट कर रहा हैकि .05 तर कोई सार्थक अन्तर नही है। अतःपरिकल्पना स्वीकार की जाती है।

सरकारी विद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालिकाओं कामध्यम सामाजिक–आर्थिक में मध्यमान 313.89 मानक विचलन 8.57 एवंमानसिक स्वास्थ्यका मध्यमान 172.92 मानक विचलन 19.93 टी अनुपात 2.01 जो यह प्रकट कर रहा हैकि .05 विश्वास स्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना निरस्त की जाती हैं।

सरकारीविद्यालय के उच्चमाध्यमिक स्तर के बालिकाओं काउच्च सामाजिक–आर्थिक में मध्यमान 356.75 मानक विचलन 15.86 एवंमानसिक स्वास्थ्यका मध्यमान 172.92 मानक विचलन 19.93 टी अनुपात 3.16 जो यह प्रकट कर रहा हैकि०05 विश्वास स्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना निरस्त की जाती हैं।

वर्तमान शैक्षिक समाजमें शिक्षा, समाज के सामाजिक व आर्थिक संरचना का मूल आधार है, क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति के पद एवं स्थिति को निर्धारित करती है। केवल ज्ञान के लिये ही नहीं, बल्कि समाज में सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सबल प्रदान करने के लिए भी शिक्षा अनिवार्य है।परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति बच्चों की परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति एवं पारिवारिक पृश्ठभूमि के कारण निम्न आय वर्ग के बच्चे जब षिक्षा के क्षेत्र में प्रवेष करते है तब उनके विचार, उनकी आकांक्षाएं बहुत ही तीव्र होती है किन्तु ये मानसिक रूप से दुर्बल होते है यही मानसिक दुर्बलता उनके षैक्षिक उद्यम तथा जीवन की प्रगति पर अपना दुश्प्रभाव डालती है जिसके कारण ये बच्चे जीवन में सभी स्तर पर निम्न होते चले जाते है।

सन्दर्भ

1. गुप्ता, डा. एस. पी.(1998) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,
2. त्रिपाठी, लालबचन (1988) मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान पद्धति, हरप्रसाद भार्गव, 4/230, कचहरी घाट,
3. सिंह, अरुण कुमार (2004) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली,
4. Anderson and Parker (1966)Society : Its introduction and operation :
5. Walia, J.S. (2005).Psychology of Teaching Learning Process, Paul Publishers.
6. शर्मा एवं मैथ्यू (1971) ने सामाजिक–आर्थिक स्तर, वंचित एवं अवंचित 14 वर्ष की आयु वाले भारतीय बच्चों के दो समूहों के अंकों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. जैचक एवं मोहन्ती (1974) ने यह ज्ञात करने का प्रयास किया कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का मूल संज्ञानात्मक कौशल के दो रूप अशाब्दिक तार्किकता एवं शाब्दिक योग्यता पर प्रभाव
8. कोहली (1989) ने व्यक्तित्व अभिलक्षण, बुद्धि तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में धर्म के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन
9. कुमारी (1990) ने सामाजिक–आर्थिक स्तर, स्व–प्रत्यय और आकांक्षा स्तर के संदर्भ में अध्ययन
10. Ali SR, McWhirter EH, Chronister KM. Self-efficacy and vocational outcome expectations for adolescents of lower socioeconomic status: A pilot study. Journal of Career Assessment, 2005.
11. Aikens NL, Barbarin O. Socioeconomic differences in reading trajectories: The contribution of family, neighborhood, and school contexts. Journal of Educational Psychology, 2008.